REET 2025
LEVEL-1&2
ROJGAR ANKIT
वंदन बैच
संस्कृत
प्रत्याहार परिचय
LIVE
02-01-2025 03:00 PM

माहेश्वर सूत्र

इक् = इ, उ, ऋ, ऌ

एच् = ए, ओ, ऐ, औ

इत् संज्ञक

अच् (स्वर)
1) अइउण्
2) ऋऌक्
3) एओङ्
4) ऐऔच्

हल् (व्यञ्जन)
5) हयवरट्
6) लण् — ल + अ + ण (इत्)
7) ञमङणनम्
8) झभञ्
9) घढधष्
10) जबगडदश्
11) खफछठथचटतव्
12) कपय्
13) शषसर्
14) हल्

र = रल्

प्रत्याहारः द्विचत्वारिंशत् भवन्ति-प्रत्याहार 42 होते हैं।

1. अक् अ, इ, उ, ऋ, ऌ

2. अच्- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ

3. अट्- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र

4. अण् अ, इ, उ

5. अण्- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य्, व्, र, ल्

6. अम्- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य्, व्, र, ल, ञ्, ङ, ण, न्, म

अइउण्
ऋऌक्
एओङ्
ऐऔच्
हयवरट्

नमस्ते मैं हूँ वर्षा

7. अल्- सभी स्वर एवं व्यंजन

8. अश्- अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य्, व्, र, ल्, ञ, म्, ङ, ण, न झ, भू, घ, द्, धू, ज्, ब्, ग्, इ, द

9. इक्- इ, उ, ऋ, लृ

10. इच्- इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ

11. इंण्- इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य्, व्, इ, ल्

12. उक्- उ, ऋ, लृ

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

13. एङ्- ए, ओ

14. एच्- ए, ओ, ऐ, औ

15. ऐच्- ऐ, औ

16. खय्- ख्, फ्, छ, व्, थ्,' च्, ट्, त्, क, प

17. खर्- ख्, फ्, छ, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क, प्, श्, प्, स

18. ङम् ङ, ण, न्

19. चय् च्, ट्, त्, क, प्

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

20. चट् च्, ट्, त्, क, प्, श्, ष्, स्

21. छव् छ, ठ्, थ्, च्, ट्, त्

22. जश् ज्, ब्, म्, ड, द्

23. झय् झ्, भ्, घ्, द, ध्, ज्, ब्, ग, ड, ५, ख, फ, छ, व्, थ्, च्, द, त्, क, प्

24. झर् झ्, भ्, घ्, द, ध्, ज्, ब्, ग, ड, द्, ख, फ्, छ, व्, थ्, च्, ट्, त्, क, प, श, ष्, स्

नमस्ते मैं हूँ वर्षा

25. झल्झ, भू, घ्, द, धू, ज्, ब, ग, ड, द, ख, फ्, छ, उ, थू, च, द, तू, क, प, श, प्, स्, ह

26. झश् झू, भ्, घ, द, ध, ज्, ब, ग, ड, द्

27. झप् झू, भू, घ, द, ध्

28. बश् ब्, ग्, ड, द

29. भप् भ्, घ, द, ध्

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

30. मय् म्, ङः ण, न्, झ, भू, घ, द, ध, ज, ब्, ग, इ, दू, ख, फ, छ, उ, थ, च, टू, तू, क्, प्

31. यञ् य्, व्, र्, ल्, ञ, म्, य्, व्, र, ल्, ञ, म्, ङ, ण, नू, झ, भ्

32. यण् य्, व्, इ, ल.

33. यम्य्, व्, र, ल, ञ, म्, ङ, ण, न्

34. यय्य्, व्, र, ल, ञ्, म्, ङ, ण, न्, झ, भु, घ, द, ध, ज, ब्, ग्, इ, द, ख, फ, छ, व्, थे, च, टू, तू, क्, प्

नमस्ते🙏, मैं हूँ वर्षा 😊

35. यर् ह को छोड़कर सभी व्यंजन

36. रल् य् तथा व् को छोड़कर सभी व्यंजन

37. वल् य् को छोड़कर सभी व्यंजन

38. वश् व्,, र, ल, ज्, म, ङ,ण,न, झ. ५.घ. द. ६. ज. ब. ग. ड. द

39. शर्- श्, प्. स्

40. शल्- श्, प, स्, ह

41. हल्- सभी व्यंजन

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

42. हश्-

नमस्ते🙏 मैं हूँ वर्षा 😊

उत्पत्ति की कथा:

- महर्षि पाणिनि ने संस्कृत व्याकरण के ज्ञान के लिए भगवान शिव की तपस्या की।
- शिव ने प्रसन्न होकर चौदह बार डमरू बजाया, जिससे चौदह सूत्र प्रकट हुए।
- इन सूत्रों को माहेश्वरसूत्र कहा जाता है।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

2. सूत्रों का उद्देश्य:

- ये सूत्र व्याकरण में अण् आदि सञ्ज्ञाओं की सिद्धि के लिए उपयोगी हैं।
- इनका उपयोग लाघव (संक्षिप्ति) के दृष्टिकोण से किया गया है।

इको यणचि

इक् + अच् = यण्

इ उ ऋ ऌ (स्वरे) = य् व् र् ल्

उत्तर प्रदेश

उ.प्र.

UP

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

3. संरचना:

- माहेश्वरसूत्र वर्णसमाम्नाय (वर्णमाला) का एक विशेष रूप हैं।
- वर्णसमाम्नाय के इन चौदह सूत्रों का निर्माण आदिरन्त्येन सहेता सूत्र से किया गया।
- इनमें अंतिम वर्णों को इट्सञ्जक (इत्सञ्ज्ञक) माना जाता है।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

4. प्रत्याहार की परिभाषा:

- प्रत्याहार का अर्थ: वर्णों को संक्षेप में प्रस्तुत करना।

नमस्ते🙏 मैं हूँ वर्षा 😊

1. अन्तिम वर्णों की भूमिका (इट्ज्ञक):

- चौदह माहेश्वरसूत्रों के अन्त में स्थित ण्, क्, ङ् आदि वर्ण इट्सञ्ज्ञक माने गए हैं।
- ये इट्सञ्ज्ञक वर्ण प्रत्याहार निर्माण में सहायक हैं।

नमस्ते मैं हूँ वर्षा

2. अकार का स्वरूप:

- माहेश्वरसूत्रों के भीतर ह आदि व्यञ्जनों में स्थित अकार केवल उच्चारण के लिए रखा गया है।
- **उदाहरण:** क = क्+अ, क्योंकि स्वर के बिना व्यञ्जन का उच्चारण संभव नहीं।
- लँण् सूत्र का अँकार केवल उच्चारणार्थ नहीं, बल्कि इट्सञ्ज्ञक है।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

3. प्रत्याहार निर्माण:

उरण् रपरः लण् = र

- प्रत्याहार निर्माण का उल्लेख उरप्परः सूत्र में किया गया है।
- चौदह माहेश्वरसूत्रों में 15 इट्सञ्ज्ञक वर्ण हैं:
- 14 अन्तिम हल् वर्ण (हर सूत्र का अंतिम वर्ण)।
- लण् सूत्र का अच् वर्ण (अकार)।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

4. अण् और इण् प्रत्याहार का सन्दर्भ:

- अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः सूत्र के अनुसार:
- लण् के ण् से अण् प्रत्याहार बनता है।
- अन्य सूत्रों में अ इ उण् क का ण् अण् प्रत्याहार हेतु प्रयुक्त होता है।
- इण् प्रत्याहार लण् के ण् से ही बनता है।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

5. वर्णों के उपयोग का उद्देश्य:

- माहेश्वरसूत्रों में हर वर्ण का एक बार उपयोग किया गया, लेकिन:
- ण् का दो बार (अ इ उण्, लण्)।
- ह का दो बार (ह यवर ट् और हल्)।
- ह के दोहरे उपयोग का उद्देश्य:
- अव्, अश्, हश् और इण् प्रत्याहार में ग्रहण।
- वल्, रल्, झल् और शल् प्रत्याहार में ग्रहण।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

6. अयोगवाह वर्ण:

- माहेश्वरसूत्रों में उल्लिखित वर्णों के अतिरिक्त जो वर्ण मिलते हैं, वे अयोगवाह कहलाते हैं।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

नास्ति वर्णसमाम्नाये योगो येषां ते अयोगाः।

1. अयोगवाह की परिभाषा:

- अयोगवाह वे वर्ण हैं, जिनका माहेश्वर सूत्रों में योग (प्रत्याहार) नहीं होता, फिर भी ये व्यवहार में प्रयुक्त होते हैं।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

2. अयोगवाह के प्रकार (5):

- अनुस्वार (ं)
- विसर्ग (:)
- जिह्वामूलीय (कख)
- उपध्मानीय (पफ)
- यथा: यम (कुँ, खूँ, गुँ, घुँ)

नमस्ते मैं हूँ वर्षा

3. संस्कृत में वर्णों की संख्या:

- संस्कृत वाङ्मय में वर्णों की संख्या 63 या 64 मानी गई है।
- 64 की गणना में सभी अयोगवाह शामिल किए जाते हैं।
- सामान्यत: वर्णमाला में 63 वर्ण होते हैं।

स्वर - 22: (अ, आ, आ३, इ, ई, ई३, उ, ऊ, ऊ३, ऋ, ॠ, ॠ३, ऌ, ॡ३, ए, ए३, ओ, ओ३, ऐ,, ऐ३, औ, औ३) प्लुत ॡ३ को न मानने पर स्वर 21 होंगें।

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

स्पर्श – 25 . (कखगघङ । च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। पफबभम)

यादि - 08: (यवरलशषसह)

यम - 04 : (कुँ खुँ गुँ घुँ)

अनुस्वार - 01:(ं)

विसर्ग - 01:(:)

जिह्वामूलीय - 01 : (क ख)

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

उपध्मानीय - 01: (प फ)

दुः स्पृष्टः 01 : (ल्)

कुल - 64

63

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

त्रिषष्टिः चतुः षष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः ।

प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयंभुवा ॥

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शाः पञ्चविंशतिः ।

यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः ॥

अनुस्वारो विसर्गश्च...... क ...... पौ चापि पराश्रितौ ।

दुःस्पृष्टश्च चेति विज्ञेय लृकारः प्लुत एव च ॥

- पाणिनीय शिक्षा लक्ष्य

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

1. माहेश्वरसूत्राणां प्रवर्तको वर्तते-

(1) शिवः

(2) पाणिनिः

(3) पतंजलिः

(4) ब्रह्मा

नमस्ते🙏, मैं हूँ वर्षा 😊

2. माहेश्वरसूत्राणि कति सन्ति-

(1) दश

(2) त्रयोदश

(3) चतुर्दश

(4) द्वादश

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

3. हल् इत्यस्य प्रत्याहारस्य तात्पर्यं वर्तते-

(1) कृषियन्त्रम्

(2) व्यञ्जनानि

(3) स्वराः

(4) समाधानम्

नमस्ते मैं हूँ वर्षा

4. अक् इत्यस्य प्रत्याहारस्य कति वर्णाः-

(1) 5

(2) 10

(3) 7

(4) 9

अइउण्
ऋऌक्

नमस्ते मैं हूँ वर्षा

5. माहेश्वरसूत्राणां काऽपरा सञ्ज्ञा वर्तते-

(1) प्रत्याहारसूत्राणि

(2) पाणिनिसूत्राणि

(3) पतंजलिसूत्राणि

(4) पदसञ्ज्ञासूत्राणि

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

6. प्रत्याहारसञ्ज्ञाविधायकसूत्रं वर्तते-

(1) अदर्शनं लोपः

(2) आदिरन्त्येन सहेता

(3) हलन्त्यम्

(4) उच्चैरुदात्तः

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

7. हल् प्रत्याहारस्य तात्पर्यं वर्तते

(1) कृषियन्त्रम्

(2) व्यञ्जनानि

(3) स्वराः

(4) समाधानम्

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

8. अच्सन्धिः इत्यत्र अच्प्रत्याहारस्य तात्पर्यं वर्तते-

(1) अकारः

(2) व्यञ्जनानि

(3) स्वराः

(4) ध्वनिः

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

9. मुखसहितनासिकया उच्चार्यमाणो वर्षो वर्तते-

(1) अनुस्वारः

(2) अनुनासिकः

(3) स्पर्शः

(4) स्वारः

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

10. माहेश्वरसूत्रैः कतिः प्रत्याहारा भवन्ति ?

(1) 44

(2) 41

(3) 21

(4) 24

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

11. पाणिनिसूत्रेषु माहेश्वरसूत्राणां कति प्रत्याहारा उल्लिखिता:?

(1) 21

(2) 42

(3) 44

(4) 46

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

12. संस्कृत वाङ्मये कति वर्णाः प्रयुज्यन्ते ?

(1) 42

(2) 52

(3) 48

(4) 64

नमस्ते, मैं हूँ वर्षा

13. यमवर्णाः कति सन्ति ?

(1) 5

(2) 4

(3) 8

(4)6

नमस्ते🙏, मैं हूँ वर्षा 😊

14. इण् प्रत्याहारे वर्णा भवन्ति ?

(1)8

(2) 5

(3) 2

(4) 11

अइउण्

नमस्ते मैं हूँ वर्षा

15. महेश्वरसूत्रेषु कति इत्संज्ञक वर्णाः सन्ति ?

(1) चतुर्दश

(2) पञ्चदश

(3) त्रयोदश

(4) दश

लँण् = ल् + अँ + ण्

नमस्ते🙏, मैं हूँ वर्षा 😊

REET 2025 L - 1&2 संस्कृत वंदन बैच

नियम 2 हकारादिष्वकार उच्चारणार्थः ॥

अर्थ (हयवरट् सूत्र से प्रारम्भ) हकार (ह) आदि में विद्यमान अकार (मात्र) उच्चारण के लिए है।

व्याख्या 'हकारादिषु' सप्तमी विभक्ति बहुवचन, 'उच्चारणार्थः प्रथमा विभक्ति एकवचन। माहेश्वर सूत्रों में जितने वर्ण हैं, उनको दो वर्गों में विभाजित किया गया है। वे हैं स्वर (अचच्) एवं व्यंजन (हल)। 'रट्+लण्। यहाँ द एवं ण की इत्संज्ञा होकर लोप होगा तो 'र+ल्' यह स्थिति बनेगी।

अब 'र' में अ उच्चारणार्थ ही है तो निकल जायेगा। तब 'र्' यह स्थिति होगी। पुनः 'लू' में भी 'अ' इत् संज्ञक है तो हम 'र' से 'अ' तक के वर्षों को ग्रहण करेंगे। 'र' से अ को मिलाने पर 'र्' प्रत्याहार बनेगा – र ल् अ = र्। अब 'र' प्रत्याहार में दो वर्ण होंगे 'र' और 'ल'। इसका प्रयोजन 'उरण रपरः आदि सन्धि स्थलों में चरितार्थ होता है।

नियम 3 लणमध्ये त्वित्संज्ञकः ।

अर्थ - लण् (छठें सूत्र) के मध्य में स्थित अकार का है।

व्याख्या 'लण' प्रथमा विभक्ति एकवचन, 'मध्ये' सप्तमी विभक्ति एकवचन, 'इत्सञ्ज्ञकः' प्रथमा विभक्ति एकवचन। ऊपर बताया गया है कि चौदह माहेश्वर सूत्रों में हकार आदि में लगे हुए अकार केवल उच्चरण के लिए हैं क्योंकि बिना स्वर की सहायता से ह् य् व् र् आदि शुद्ध व्यंजनों का उच्चारण सम्भव नहीं है।

अब यहाँ एक नयी बात सामने आ रही है 'लण' सूत्र में विद्यमान 'अ' (लु+अ+ण) के उच्चारण के लिए तो है ही साथ-साथ एक प्रयोजन और भी है कि यह इत् संज्ञक भी है। अर्थात् जैसे- चौदह माहेश्वर सूत्रों के अन्त्य वर्णों (ण क् आदि) की इत् संज्ञा होती है, वैसे ही 'लण' सूत्र में विद्यमान अकार भी इत् संज्ञक है। स्पष्ट है कि ल् के साथ जुड़े हुए 'अ' के दो रूप हैं। यह उच्चारणार्थक होने के साथ-साथ इत्-संज्ञक भी है। इसकी इत् संज्ञा करने का प्रयोजन 'र्' प्रत्याहार की सिद्धि करना है। जैसे - हम 'र्' प्रत्याहार की सिद्धि करना चाहते हैं तो हमें 'हयवरट्' के सूत्र के र् से लेकर लण सूत्र के 'अ' तक के वर्षों को ग्रहण करना होगा।

वृत्ति - उपदेशेऽन्त्यं हल् इत् स्यात्। उपदेश आद्योच्चारणम्। सूत्रेष्वदृष्टं पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र।

अर्थ उपदेश में वर्तमान अन्त्य हल् (व्यंजन) इत् संज्ञक हो। आद्यो (शिव, पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि) का उच्चारण या कथन ही उपदेश है अथवा धातु आदि के आद्योच्चारण को उपदेश कहते हैं। सूत्रों में (जिन पदों की आवश्यकता हो किन्तु उपस्थित न हो) जो पद न हों (किन्तु वृत्ति में दिखाई दें) उन्हें पिछले या कहीं-कहीं अगले) सूत्र से ग्रहण कर लेना चाहिए।

व्याख्या 'उपदेशे' सप्तमी विभक्ति एकवचन, 'अन्त्यम्' प्रथमा विभक्ति एकवचन, 'हल्' प्रथमा विभक्ति एकवचन, 'इत्' प्रथमा विभक्ति एकवचन। इस व्याकरणशास्त्र के प्रथम कर्ता आचार्य पाणिनि हैं। इन्होंने 'अष्टाध्यायी' नामक जगत् प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में आठ अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में (8X4 = 32) बत्तीस पाद हैं। प्रत्येक पाद में सूत्रों की संख्या भिन्न-भिन्न है। इसे निम्न तालिका से समझा जा सकता है,

यथा- पाणिनी : अष्टाध्यायी = 8 अध्याय × 4 पाद = 32 पाद

अध्यायनाम	प्रथम पाद	द्वितीय पाद	तृतीय पाद	चतुर्थ पाद	सम्पूर्ण संख्या
प्रथमाध्याय	74	73	93	109	349
द्वितीयाध्याय	71	38	73	85	267
तृतीयाध्याय	150	188	176	117	631
चतुर्थाध्याय	176	144	166	144	630
पंचमाध्याय	135	140	119	160	554
षष्ठाध्याय	217	198	138	175	728

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

सप्तमाध्याय	103	118	119	97	437
अष्टमाध्याय	74	108	119	68	369
सम्पूर्ण अष्टाध्यायी की सूत्र संख्या					3965

लगभग 4000 सूत्र

इनमें से बयालीस (42) प्रत्याहार तो आचार्य पाणिनि ने स्वयं सूत्रों में व्यवहृत किये हैं। शेष दो में से एक 'अम्' उणादि सूत्रों का एवं दूसरा 'चय' वार्तिकपाठ का है। प्रत्याहारों के अन्तर्गत इत् संज्ञक वर्णों का ग्रहण नहीं किया जाता है "प्रत्याहारेषु इतां ग्रहणं न।" इस प्रकार चौदह माहेश्वर सूत्रों की सहायता से किसी भी सूत्र से कोई वर्ण ग्रहण करके आगे के इत् संज्ञक वर्ण के साथ मिलाकर प्रत्याहार बना सकते हैं। अब प्रत्याहारगत वर्णों का ज्ञान करने के लिए निम्नलिखित बातों को कण्ठस्थ कर लें-

क) वर्गों के पांचवें वर्ण अमङणनम् सूत्र में हैं।

ख) वर्गों के चौथे वर्ण झभञ्, घढधष सूत्र में हैं।

ग) वर्गों के तृतीय वर्ण जबगडदश सूत्र में हैं।

घ) वर्गों के द्वितीय वर्ण खफछठथ तक हैं।

ङ) वर्गों के प्रथम वर्ण चटतप्, कपय् सूत्रों में हैं।

च) ऊष्म वर्ण शषसर्, हल् सूत्रों में हैं।

छ) अन्त:स्थ वर्ण यवरट्, लण सूत्रों में हैं।

ज) स्वर वर्ण अइउण ऋलृक् एओङ् ऐऔच सूत्रों में हैं।

अब शास्त्रोपयोगी समस्त प्रत्याहारों एवं उनकी सूत्रगत उपयोगिता का विवरण निम्नवत् हैं।

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
1. अण्	अ, इ, उ	उरण रपरः (29)
2. अक्	अ. इ. उ, ऋ, लृ	अकः सवर्णे दीर्घः (42)
3. इक्	इ, उ, ऋ, लृ	इको यणचि (15)
4. उक्	उ, ऋ, ल्	उगितश्च (1250)
5. एङ्	ए. ओ	एङः पदान्तादति (43)
6. अच्	सम्पूर्ण स्वर	इको यणचि (15)
7. इच्	'अ' को छोड़कर सभी स्वर	नाद् इचि (127)

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
8. एच्	ए. ओ. ऐ, औ	एचोऽयवायाव: (22)
9. ऐच्	ऐ, औ	वृद्धिराद् ऐच् (32)
10. अट्	सभी स्वर, टू. य्. व्. र	अट्कुप्वानुम्व्यवायेऽपि (130)
11. अण्	सभी स्वर, ट्, अन्त:स्थ वर्ण	अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्यय: (11)
12. इण्	'अ' को छोड़कर सब स्वर, हु, अन्त:स्थ	इण: षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात (514)
13. यण्	अन्त:स्थ वर्ण	इको यणचि (15)

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
14. अम्	स्वर, ह्, अन्त:स्थ, वर्ग-पञ्चम	पुमः खयि अम्परे (94)
15. यम्	अन्त:स्थ, वर्ग-पञ्चम	हलो यमां यमि लोपः (1000)
16. ञम्	वर्ग-पञ्चम	मन्ताङः (उणादि 112)
17. ङय्	ङ. ण्. न्	ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् (89)
18. यम्	अन्त:स्थः वर्ग-पञ्चम, झ. भू.	अतो दीर्घो यञि (390)

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
19. झष्	वर्ग-चतुर्थ	एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो: (253)
20. भष्	'भ को छोड़कर वर्ग-चतुर्थ	एकचो वशो भष् झष. (253)
21. अश्	स्वर; हु; अन्त:स्थ: वर्गों के पञ्चम, चतुर्थ, तृतीय वर्ण	भोभगोअघो अपूर्वस्य योऽशि (108)
22. हश्	ह; अन्त:स्थ, वर्गों के पञ्चम, चतुर्थ, तृतीय	हशि च (107)

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
23. वश्	व्, र, ल, वर्गों के पञ्चम, चतुर्थ, तृतीय	नेड्वशि कृति (800)
24. जश्	वर्ग-तृतीय	झलां जशोऽन्ते (67)
25. झश्	वर्गों के चतुर्थ एवं तृतीय वर्ण	झलां जश् झशि (19)
26. बश्	ब. ग. ड्. द	एकाचो बशो भष्. (253)
27. छव्	छ, ठू. थ्. च्. टू. त्	नश्छवि + अप्रशान् (95)

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
28. यय्	अन्त:स्थ: सब वर्ग	अनुस्वारस्य ययि परसवर्ण: (97)
29. मय्	अ को छोड़कर सब वर्ग	मञ् उञो वो वा (58)
30. झय्	वर्गों के 4, 3, 2, 1 वर्ण	झयो होऽन्यतरस्याम् (75)
31. खय्	वर्गों के प्रथम एवं द्वितीय वर्ण	पुन: खयि + अम्परे (94)
32. चय्	वर्गों के प्रथम वर्ण	चयो द्वितीया: शरि पौ. (वा. 14)

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
33. यर्	अन्त:स्थ; सभी वर्ग; श. ष, स्	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (68)
34. झर्	वर्गों के 4, 3, 2, 1; श, ष्, स्	झरो झरि सवर्णे (73)
35. खर्	वर्गों के 1, 2; श, ष्. स्	खरि च (74
36. चर्	वर्गों के 1; श्, ष, स्	अभ्यासे चर् च (399)
37. शर्	शु, ष, स्	ङ्णोः कुक्टुक् शरि (86)
38. अल्	सभी स्वर; सभी व्यंजन	अलोऽन्त्यस्य (21)

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
39. हल्	सभी व्यंजन	हलोऽनन्तरा: संयोग: (13)
40. वल्	य् को छोड़कर सब व्यंजन	लोपो व्योर्वलि (429)
41. रल्	य्. व् को छोड़कर सब व्यंजन	रलो व्युपधाद्धलादे: संश्च (887)
42. झल्	वर्गों के 4, 3, 2, 1; ऊष्म वर्ण	झलो झलि (478)
43. शल्	ऊष्म वर्ण	शल इगुपधादनिट: क्स: (590)

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

प्रत्याहार	संज्ञी वर्ण	उदाहरण, सूत्र संख्या
44. र	र्. ल् वर्ण	उरण रपरः (29)